❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 43, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 अगस्त, 2020 से रविवार 9 अगस्त, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

समस्त देशवासियों को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) की हार्दिक शुभकामनाएँ

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के भव्य स्मारक – श्री राम मन्दिर आधारशिला रखे जाने पर आर्यसमाज की ओर से सम्पूर्ण मानवजाति को बधाई

श्रीराम मन्दिर के शिलान्यास की सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं – महाशय धर्मपाल, संरक्षक सार्वदेशिक सभा

सम्पूर्ण आर्यावर्त्त के प्रेरणास्रोत हैं–श्रीराम
– सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

भारतीय संस्कृति के महान प्रणेता हैं– श्रीराम
– धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

श्री राम मन्दिर बनेगा विश्व धरोहर
– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

राम से मर्यादा की प्रेरणा लेकर रामराज्य की ओर अग्रसर हो युवा पीढ़ी – विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

5 अगस्त 2020 अयोध्या (उ. प्रदेश) मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी महाराज की जन्मस्थली अयोध्या में उनके स्मारक–मंदिर को लेकर लंबे संघर्ष के बाद संकल्प की सफलता और पूर्णता का आनंदमय दृश्य भारत सहित विश्व के कोने–कोने में श्री राम के अनुयायियों को देखने के लिए मिला। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चंद्र जी महाराज की जन्मस्थली अयोध्या में उनके भव्य स्मारक–मंदिर की आधारशिला रखी तो ये अद्भुत पल भारत राष्ट्र के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गये। भारत में और विश्व भर में दिवाली से पहले दिवाली मनाई गई। चारों तरफ उमंग उत्साह और उल्लास का वातावरण निर्मित हुआ, सबने अपने–अपने घरों में दीप जलाए और खुशियां मनाई। यह एक ऐसा ऐतिहासिक अवसर था जब लंबे संघर्ष के बाद मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जोकि भारतीय वैदिक संस्कृति और परंपरा के परम आधार माने जाते हैं, जिनकी शिक्षाएं और संस्कार मानव मात्र के लिए अनुकरणीय हैं, जिन्होंने वैदिक धर्म के अनुरूप आचरण करते हुए मातृ–पितृ भक्ति, राष्ट्रभक्ति, ईश्वर भक्ति की पराकाष्ठा को प्राप्त करते हुए संपूर्ण जगत को यही संदेश दिया कि चाहे कैसी भी स्थिति–परिस्थिति जीवन में आए लेकिन धर्म की परिपालना सर्वोपरि है। ऐसे महापुरुष की जन्म भूमि पर स्मारक का निर्माण अत्यंत आवश्यक भी था और अनिवार्य भी था। यह कार्य संपूर्ण मानव जगत के लिए प्रेरणा का आधार स्तंभ सिद्ध होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भारतीय संस्कृति में इस तरह से रचे बसे

– शेष पृ

राम जन्मभूमि की लम्बी लड़ाई में आर्यसमाज भी रहा एक पक्ष : सुप्रीम कोर्ट में मजबूती से रखी अपनी बात

श्री राम मन्दिर परिसर में दैनिक अग्निहोत्र हेतु बनें भव्य यज्ञशाला : मन्दिर निर्माण ट्रस्ट से पत्र द्वारा किया निवेदन

सदियों के संघर्ष में भारतीय वैदिक संस्कृति और परम्परा की हुई जीत

आर्यसमाज द्वारा संचालित महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के प्रतिभावान विद्यार्थियों ने

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी–सीएसए) की परीक्षा की उत्तीर्ण : फहराया सफलता का परचम

सार्वदेशिक सभा के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, प्रधान सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने दी बधाई

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की स्थापना 1 अगस्त 2018 को की गई थी और संयोग देखिए 4 अगस्त 2020 को संस्थान के दो होनहार छात्रों – अनिल कुमार राठौड़, मूल निवासी मुरैना, मध्य–प्रदेश ने 81 रैंक और सुशांत पाधा जम्मु ने 814 रैंक प्राप्त करके संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी – सीएसए) की परीक्षा की उत्तीर्ण की है। इन दोनों होनहार छात्रों को आदरणीय महाशय धर्मपाल जी ने भरपूर आशीर्वाद और शाबासी प्रदान करते हुए जीवन में हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। महाशय जी ने इन दोनों प्रतिभावन छात्रों को मानव

– शेष पृष्ठ 7 पर

विद्यार्थियों का अनुभव उन्हीं की जुबानी

आर्यसमाज और महाशय धर्मपाल जी का हार्दिक धन्यवाद

81 रैंक
अनिल कुमार राठौड़

"मैं अनिल राठौड़ मूल रूप से मुरैना मध्य प्रदेश का निवासी हूं। ग्रेजुएशन के बाद मुझे आर्य समाज द्वारा संचालित महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा संस्थान के विषय में पता चला और वहां पूरी प्रक्रिया का पालन करने पर मुझे प्रवेश प्राप्त हुआ। यूपीएससी परीक्षा की सफलता में संस्थान का योगदान महत्वपूर्ण से रहा। संस्थान द्वारा भोजन, आवास और कोचिंग के व्यवस्था अति उत्तम रही। इसके लिए मैं आर्यसमाज और महाशय धर्मपाल जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।"

– अनिल राठौर, रैंक 81

स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं जो मैं संस्थान का हिस्सा बना

814 रैंक
सुशान्त पाधा

"मेरा नाम सुशांत है और मैं जम्मू कश्मीर से हूँ। मैं राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर हूँ। मैं महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का हिस्सा बनकर बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। आर्यसमाज के इस संस्थान द्वारा अच्छा भोजन, कोचिंग कक्षाएं और अन्य कोचिंग कक्षाओं में शामिल होने के लिए वित्तीय मदद मिली है जो कि यू.पी.एस.सी. परीक्षा पास में सफलता में बहुत सहायक सिद्ध हुई है। इसके लिए मैं आदरणीय महाशय धर्मपाल जी का और आर्यसमाज का जितना थैंक्स कहूं उतना कम है।"

– सुशान्त पाधा, रैंक 814

वेद-स्वाध्याय

सच्चा राजा

चित्र इदाजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ।
पर्जन्यइव ततनद्धि वृष्ट्या सहस्रमयुता ददत् ।। -ऋक्० ८/२१/१८
ऋषिः **सोभरि काण्वः**।। देवता - **चितः** ।। छन्दः - **निचृत्पंक्ति** ।।

शब्दार्थ - चित्रः = वे परम पूजनीय या विलक्षण शक्ति परमेश्वर **इत्** = ही एकमात्र राजा राजा हैं **अन्यके** = अन्य [दुनियावी राजा] तो **राजकाः इत्** = क्षुद्र राजे ही हैं **यके** = जो क्षुद्र राजे **सरस्वतीम् अनु** = [उसकी मनुष्य लोक में बसाई] समष्टि ऐश्वर्य की नदी द्वारा बने हैं, क्योंकि वही **सहस्रा अयुता** = सहस्रों-लाखों प्रकार के धन-ऐश्वर्यों को **ददत्** = देता हुआ **पर्जन्यः इव** = मेघ को भांति **वृष्ट्या** = अपनी ऐश्वर्यवृष्टि से **हि** = निःसन्देह [इन संसारी राजाओं को] **ततनत्** = भरता है, ऐश्वर्य-जल से पूरित कर बढ़ाता है, बड़ा बनाता है।

विनय - भाइयो! इस संसार में 'चित्र' देव ही एकमात्र राजा है। और वे 'चित्र' देव, वे परम पूजनीय परमेश्वर, वे महा अद्भुत, विलक्षण शक्ति, जगदीश्वर, जोकि अपने अनन्त प्रकार के ऐशवर्यों को इस जगती तल पर अनवरत बरसा रहे हैं वे ही संसार के एक सच्चे राजा हैं। किसी एक प्रकार का थोड़ा-बहुत ऐश्वर्य रखनेवाले और उसका दान करनेवाले हम लोगों में 'राजा' - 'महाराजा' आदि कहलानेवाले, संसार के ये बड़े-से-बड़े ऐश्वर्यशाली पुरुष भी उसके सामने क्या राजा हैं? तनिक देखो कि इन्हें उस बरसने वाले महान् ऐश्वर्य में से, हजारों-लक्षों प्रकार से बरसते इन अनन्त ऐश्वर्य में से कितना अतिक्षुद्र अंश ही प्राप्त हुआ है! 'चित्र' प्रभु की उस ऐश्वर्य वर्षा से, बरसाती नदी की तरह, इस मनुष्य लोक में बह निकलनेवाली जो एक समष्टि ऐश्वर्य की अलक्षित नदी, सरस्वती, बह रही हैं, उस नदी से अन्यों की अपेक्षा कुछ अधिक वर्ष - जल पाकर ये दुनियावी राजा 'राजा' बने हैं । बस , उनका इतना ही ऐश्वर्य । उस बरसानेवाले ऐसी सहस्रों सरस्वतियों को बहानेवाले, उस अनन्तधनी के सामने ये कितने क्षुद्रातिक्षुद्र हैं!

मैं सोचा करता था कि संसार में जो मुझे नाना प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हो रहे हैं, इनका प्रदाता कौन है? मैं अबतक समझता था कि ज्ञान, तप, बल और धन आदि जो नाना प्रकार के विलक्षण ऐश्वर्य मुझे प्राप्त हुए हैं उनके प्रदाता वे-वे उन-उन ऐश्वर्यों के धनी पुरुष ही हैं, परन्तु जल से मुझे इस महान ऐश्वर्य-वृष्टि का अनुभव हुआ है और बरसानेवाले 'चित्र' प्रभु का दर्शन हुआ है, तबसे मैं उस प्रभु के इस दिव्य महादान के ही स्तुति-गीत गाने लगा हूँ। ओह , 'चित्र' ही इस संसार में राजा है, ' चित्र' ही एकमात्र इस संसार में सच्चे राजा हैं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण को लेकर मुस्लिम संगठनों के जहरीले बयान

श्रीराम मन्दिर पूजन में धर्मनिरपेक्षता कहां गई

....दुनिया में 56 मुस्लिम राष्ट्र हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि एक देश में जितनी विचारधारा के मुसलमान हैं वे अपनी सत्ता स्थापित करने की जुगाड़ लगाते रहते हैं। इसलिए इन देशों में मुसलमानों के अनेक गुट सत्ता हथियाने के लिए लड़ने और युद्ध करने के लिए, हमेशा तैयार रहते हैं। जिन देशों में उनकी संख्या कम होती है वे पहले तब्लीग और कन्वर्जन के नाम पर अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। इस संख्या को बढ़ाने के लिए कन्वर्जन से लगाकर अधिक बच्चे पैदा करने और लव जिहाद की मुहिम चलाकर वे अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। फिर कुछ ही वर्षों में एक नए देश की मांग करने लगते हैं। एशिया को विजय कर लेने के बाद वे अफ्रीका की ओर बढ़े। अवसर मिला और यूरोप में भी घुसे। आज इस्लाम परस्तों की यह लालसा है कि वे नम्बर एक पर पहुँच जाएं। .....

एक लंबी सियासी और अदालती लड़ाई के बाद 5 अगस्त को प्रधानमंत्री मोदी जी के हाथों द्वारा राम मंदिर का शिलान्यास किया गया। करीब 493 साल लम्बे कालखंड के संघर्ष के पश्चात मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र जी के भव्य मन्दिर की नींव रखी गई। लेकिन इसी बीच ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की टिप्पणी आई है। सोशल मीडिया के प्लेटफार्म ट्विटर के माध्यम पर्सनल लॉ बोर्ड ने बयान जारी कर कहा कि बाबरी मस्जिद थी और हमेशा मस्जिद ही रहेगी। हम सब के लिए हागिया सोफिया एक उदाहरण है। दिल दुखाने की कोई बात नहीं है। स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रहती।

सिर्फ इतना ही नहीं इसके बाद मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अपनी वेबसाइट पर एक विवादित कहें या जहर घोलने वाली प्रेस विज्ञप्ति भी जारी की है। जिसमें सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर सवाल और मक्का मदीना के उदहारण दिए गये हैं। यानि ये तक कहा गया की एक समय वहां भी मूर्ति पूजा होती थी, लेकिन आज मस्जिदें हैं। इससे साफ समझा जा सकता है कि मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड भविष्य में क्या योजना बना रहा है।

असल में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जो कुछ भी कह रहा है वह डर या धमकी स्वरूप नहीं कह रहा है। बल्कि जो कुछ कहा जा रहा है इसके एतिहासिक रूप से प्रमाण है। राम मंदिर से लेकर काशी और मथुरा इसके प्रमाण हैं। इसके अलावा हाल ही में तुर्की के हागिया सोफिया चर्च को मस्जिद का बनाया जाना भी इसी लक्ष्य का हिस्सा है। इसके अलावा मध्ययुगीन भारत में करीब चालीस हजार हिंदू मंदिरों का विध्वंस भी इसी मानसिकता जा हिस्सा है। 1974 में उत्तरी साइप्रस में तुर्की द्वारा चर्च का विध्वंस करना, 1990 के दशक में मक्का की प्राचीन कलाकृतियों को सऊदी द्वारा ध्वस्त किया जाना, फिलीस्तीनियों द्वारा वर्ष 2000 में यहूदियों की मजार को हटाया जाना, 2001 में तालिबान द्वारा बामियान बुद्ध की मूर्तियों को तोडा जाना, वर्ष 2002 में अल कायदा द्वारा ट्यूनीशिया में गरीबा गिरिजाघर पर बम गिराया जाना, 2003 में इराकी संग्रहालय, पुस्तकालय और अभिलेखागार को लूटा जाना। मिस्र के प्राचीन पिरामिड से लेकर विश्वभर की अति प्राचीन महत्व की सभ्यताओं को नष्ट करना, ये मानसिकता अपना समय-समय पर परिचय दे देती है।

दूसरा आगे बढें तो एक बार फिर उस धर्मनिरपेक्षता का नकाब भी इनके चेहरे से उतर गया, जिसे लगाकर ये लोग अक्सर अपने तमाशे करते रहते हैं। तीसरा दरअसल यह टकराव आज लुकाछिपी का नहीं रहा, एशिया से लेकर यूरोप और अमेरिका भर में, ये अतिवाद बढ़ रहा है। कुछ समय पहले धार्मिक संबंधों से जुड़ी एक पत्रकार केरोलिन व्हाइट का इस संबंध में एक विस्तृत आलेख प्रकाशित हुआ था।

केरोलिन ने लिखा था कि दुनिया में 56 मुस्लिम राष्ट्र हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि एक देश में जितनी विचारधारा के मुसलमान हैं वे अपनी सत्ता स्थापित करने की जुगाड़ लगाते रहते हैं। इसलिए इन देशों में मुसलमानों के अनेक गुट सत्ता हथियाने के लिए लड़ने और युद्ध करने के लिए, हमेशा तैयार रहते हैं। जिन देशों में उनकी संख्या कम होती है वे पहले तब्लीग और कन्वर्जन के नाम पर अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। इस संख्या को बढ़ाने के लिए कन्वर्जन से लगाकर अधिक बच्चे पैदा करने और लव जिहाद की मुहिम चलाकर वे अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। फिर कुछ ही वर्षों में एक नए देश की मांग करने लगते हैं। एशिया को विजय कर लेने के बाद वे अफ्रीका की ओर बढ़े। अवसर मिला और यूरोप में भी घुसे। आज इस्लाम परस्तों की यह लालसा है कि वे नम्बर एक पर पहुँच जाएं। वे किसी न किसी बहाने युद्ध को निमंत्रण देते रहते हैं। यह मुस्लिम कट्टरवादियों की बुनियादी रणनीति है जिस पर चलकर मुस्लिम जनता को युद्ध के लिए तैयार किया जा सकता है।

अब आप खुद सोचिये मदनी ने पचास साल क्यों कहे? इसे समझने के लिए थोडा पीछे चले तो 3 अप्रैल, 2015 को वॉशिंगटन स्थित प्यू रिसर्च सेंटर की एक रिपोर्ट आई थी जिसके अनुसार वर्ष 2050 तक भारत इंडोनेशिया को पीछे छोड़कर पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा मुसलमान आबादी वाला देश बन जाएगा। तो मदनी को पता है कि उनके लोग इस विस्तार में रात-दिन मेहनत कर रहे हैं। यहाँ तक कि पिछले दिनों रांची के क्वारटाइन सेंटर में भी तबलीगी जमात की तीन महिलायें गर्भवती हो गयी थीं। 23 जुलाई को दैनिक जागरण में यह खबर बड़े अक्षरों में प्रकाशित हुई थी जिसका अर्थ था कि आखिर सोशल डिस्टेंसिंग कहाँ गयी, जब ये ही करना था तो घर में ही कर लेते। तो लक्ष्य अभी संख्याबल बढ़ाने का है जैसे ही संख्या बल बढ़ जायेगा, लाठी हाथ में आ जाएगी और भारत फिर से मध्ययुगीन यानि सातवीं सदी में चला जायेगा।

लेकिन भारत के बहुत पढ़े-लिखे और अत्यधिक शिक्षित कथित धर्मनिरपेक्षवादी अभिव्यक्ति के नाम पर हमारे देश में अक्सर अपनी लीला करके मिडिया में छाये रहने वाले लोग, ऐसी खबरों को घास नहीं डालते। न इन्हें विवादित बयान मानते है। उनके लिए ऐसे बयान मायने नहीं रखते, हाँ इसके विपरीत खबरें छप रही है कि चांदी की ईंट से शिलान्यास करके आस्था को लोगों के बीच अंतर पैदा करने के लिए और भारत की युवा पीढ़ी में दरारें डालने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम को भारत में एक सिकुड़ती हुई सोच का प्रतीक बनाया जा रहा है, हम भले ही इसे एक नए भारत का नाम दें, पर ये उस भारतीय गणतंत्र पर गहरा आघात है। आदि आदि।

- शेष पृष्ठ 4 पर

साईं बाबा से जीशान बाबा तक : क्या है पूरा मामला!

......हर जगह बंगाली और रूहानी बाबाओं के विज्ञापनों को देखकर तो लगता है कि देश को सरकार नहीं, यही चला रहे हैं। इनके विज्ञापनों से समस्याओं की कुछ कैटगरी इस प्रकार है। पति पत्नी अनबन, लव मैरिज, खोया प्यार, प्यार में धोखा खाए प्रेमी प्रेमिका एक बार जरूर संपर्क करें। बेटा आपकी बात नहीं मानता है तो हमारे पास आइये। इनके पास मनचाहे प्यार का समाधान है और सौतन से भी छुटकारा दिला देते हैं। बेशक आपका घर तक बिक जाये। जमीन विवाद मिनटों में सुलझाने की केटेगरी भी इनके पास है, पता नहीं आज तक डोकलाम से लेकर पाकिस्तान के साथ जितने जमीनी विवाद है उन्हें इन्होंने क्यों नहीं सुलझाया! .....

इन बदमाश औलिया, मौलवियों, बंगाली बाबाओं, मियां, जादूगर बाबाओं और तांत्रिकों आदि के पास ऐसी कोई आलोकिक शक्ति या इल्म आदि नहीं होता जिससे ये किसी का भला कर सकें बल्कि ये खुद नशेडी, अय्याश, चालबाज, धोखेबाज और अपराधिक प्रवृति के होते हैं। इनके क्या किसी के पास भी नहीं होता। अपनी मेहनत और ईश्वर पर विश्वास ही हमारा सबसे बड़ा सहायक होता है।

जब है समाधान तो क्यों हैं परेशान, फोन उठायें और मौलवी और बाबाओं के बाबा तांत्रिकों के तांत्रिक और महान सम्राट आपसे मिलने को हैं बेकरार, प्यार में धोखा खाए हुए व्यक्ति एक बार संपर्क जरुर करें। पति-पत्नी में अनबन हो या हो गृह क्लेश, अगर बना बनाया काम बिगड़ जाता हो या रूठे प्यार को मनाना हो नौकरी में तरक्की चाहिए या पड़ोसन को वश में करना हो, बस फोन घुमाइए बाबा सिकंदर शाह आपकी हर मुराद पूरी करेंगे। अचानक राम, कृष्ण बुद्ध और नानक जी की भूमि पर ये बंगाली बाबाओं की बाढ़ कहाँ से आ गयी? आखिर चाँद मियां से सुल्तान मियां तक, साईं बाबा से जीशान बाबा तक का राज क्या है?

असल में दुनिया बहुत तेज गति से आगे बढ़ रही है या कहो अभी एक अनूठे फेज में इंसानी उम्मीद उसी खतरनाक स्पीड पर आगे बढ़ रही है। वो है अखबारों, दीवारों, मीनारों में संकट मोचक बंगाली बाबाओं के विज्ञापन। ऑटो में बैठें तो मुंह के सामने चार-पांच बंगाली बाबाओं के पोस्टर चिपके होते हैं, बस में सिर के ऊपर, रेल में सामान टांगने की जगह बंगाली बाबाओं के स्टीकर लटके होते हैं। इसके बाद रोज सुबह अखबार खोलते हैं तो सभी अखबारों में मानों एक पेज तो इन्हीं बंगाली बाबा के नाम हो गया। अखबारों के अलावा इनके विज्ञापन बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और बाजारों में दिख जाते हैं। ट्रक से लेकर और माल ढोने वाले टेम्पो के पीछे भी इनका पोस्टर लगा होता है। सार्वजनिक शौचालयों और प्याऊ के ऊपर तो इनका ही पता होता है।

हर जगह बंगाली और रूहानी बाबाओं के विज्ञापनों को देखकर तो लगता है कि देश को सरकार नहीं, यही चला रहे हैं। इनके विज्ञापनों से समस्याओं की कुछ कैटगरी इस प्रकार है। पति पत्नी अनबन, लव मैरिज, खोया प्यार, प्यार में धोखा खाए प्रेमी प्रेमिका एक बार जरूर संपर्क करें। बेटा आपकी बात नहीं मानता है तो हमारे पास आइये। इनके पास मनचाहे प्यार का समाधान है और सौतन से भी छुटकारा दिला देते हैं। बेशक आपका घर तक बिक जाये। जमीन विवाद मिनटों में सुलझाने की केटेगरी भी इनके पास है, पता नहीं आज तक डोकलाम से लेकर पाकिस्तान के साथ जितने जमीनी विवाद है उन्हें इन्होंने क्यों नहीं सुलझाया!

यही नहीं पिछले दिनों एक बंगाली बाबा ने सभी केटेगरी लिखकर नीचे लिखा था कि मौत को छोड़कर सब समस्याओं का समाधान। लेकिन इसके बाद एक दूसरा बंगाली बाबा सामने आया जिसने लिखा था मरे हुए लोगों को जिन्दा किया जाता है आल इंडिया खुला चेलेंज। यही नहीं अब कुछ बंगाली बाबा ऐसे भी आ गये जो कहते हैं अगर बंगाली बाबाओं ने लूटा हो तो हमारे पास आइये। मसलन अगर कुछ बच गया हो तो ये उसे भी खा जायेंगे।

बहुत बार व्यापार में घाटा खाए, पति से तकरार होने या नौकरी के छूट जाने या फिर गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप के बाद कुछ लोग सोचते हैं चलो एक बार कॉल कर लेने में जाता ही क्या है? बस यहीं से इनका खेल शुरू हो जाता है। ये ग्राहक की परेशानी सुनते ही तुरंत अपना ऐसा जाल फेंक देते हैं कि उससे बाहर आने के लिए या तो मोटी रकम चुकानी पड़ती हैं या अपनी इज्जत दांव पर लगनी पड़ती है। अगर किसी महिला ने एक बार अपनी इज्जत दांव पर लगा भी दी तो ये उसका विडियो बना लेते हैं और ब्लेकमेल करके पैसे लेने लगते हैं या फिर दूसरी महिला या उनकी सगी बेटी को लाने की डिमांड रखने लगते हैं। इस स्थिति में इन्सान के पास दो रास्ते बचते हैं या तो इनकी डिमांड पूरी करें या आत्महत्या।

आठ अप्रैल 2016 भोपाल में कासिम शेख उर्फ मेंहदी हसन नाम के बंगाली बाबा ने 1 ही परिवार की 7 लड़कियों से रेप किया था। कासिम शेख उर्फ मेंहदी हसन नाम के इस बंगाली बाबा ने टोने-टोटके की सामग्री के नाम पर एक लंबी-चौड़ी लिस्ट परिवार को बतायी थी। इस सामग्री की कीमत 10 से 15 लाख रुपये थी। अपने तंत्र का डर दिखाकर हसन ने पीड़ित परिवार से टोटके की सामग्री के बहाने 15 लाख रूपये लिए लेकिन सामग्री तो कभी आई नही, उल्टा हसन तंत्र के नाम पर इन नाबालिग बच्चियों को एकांत में ले जाकर बलात्कार करता रहा। कोई एक दो बार नहीं बल्कि लगातार चार से पांच साल तक हसन उन बच्चियों की आबरू से खेलता रहा।

इसी तरह पिछले दिनों पहले ही एक गारमेंट व्यापारी महिला थी उसका बेटा पढाई में कमजोर था, महिला को एक बंगाली बाबा का पोस्टर दीख गया जिसमें एक केटेगरी पढ़ाई में कमजोर बच्चों के लिए भी थी। 36 साल की उस महिला को दुराचारी बाबा ने उसके बेटे को पढ़ाई लिखाई में इंटेलीजेंट बनाने की बात कह बहला फुसलाकर दुष्कर्म कर डाला। दुःख की बात ये भी है कि महिला ने अपना इतना दिमाग नहीं लगाया कि अगर इसके टोटके से पढ़ाई लिखाई में इंटेलीजेंट बना जाता तो ये खुद पीएचडी क्यों नहीं कर लेता!

दूसरा अगर इनके पास कोई पुरुष चला जाये क्योंकि इनकी केटेगरी में नौकरी और नौकरी में तरक्की से लेकर सत्ता सुख और इंटरकास्ट मैरिज तक की केटेगरी है। ये उसे यकीन दिला देंगे कि उसका काम पक्का हो जायेगा। लेकिन इसके लिए पूजा करनी पड़ेगी जिसके लिए पहाड़ी उल्लू का पंजा, मोर के आंसू लंगूर की मूछ का बाल, कोबरा सांप का दांत- मसलन ऐसी चीजें लाने के लिए कहेंगे जो न आपने पहले सुनी होंगी और न कहीं मिल सकती हैं। अब इन चीजों को कौन लाये जैसे ही वह आदमी इन्हें लाने में असमर्थता जताता है ये तुरंत बोल उठेंगे पैसे दो हम ले आयेंगे। जैसे इन्हें पैसे ट्रांसफर होते हैं फिर ये आपका फोन या तो उठाते नहीं या धमकी देना शुरू कर देते हैं।

कुछ समय पहले दिल्ली के खजूरी इलाके में रात को एक युवती टीवी देख रही थी, ब्रेक में एक बंगाली बाबा का विज्ञापन आया। युवती ने सोचा टीवी पर विज्ञापन आ रहा है जरुर इसमें सच्चाई होगी, युवती को अपने मनचाहें प्यार की तलास थी, एक-दो पर वशीकरण भी करना था। युवती बंगाली बाबा इरशाद के चक्कर में आ गयी और अपने सारे जेवर और 11 हजार रुपये गंवा दिए।

ऐसे एक दो नहीं हजारों किस्से थानों के फाइलों में धुल फांक रहे हैं और इनसे कई गुना अधिक वो किस्से जो या तो दर्ज नहीं होते या अपनी इज्जत आबरू रुपया पैसा लुटाकर चुपचाप घर बैठ जाते हैं। ताकि उनकी मुर्खता पर कोई ना हँसे। क्योंकि इन्हीं आश्वासनों और घटिया हथकंडो का सहारा लेकर भोले-भाले और मूर्ख लोगों या खासकर महिलाओं को उनकी तकलीफों, समस्याओं, गृह कलेशों, आर्थिक व् पारिवारिक अप्तियों, प्रेम संबंधों आदि से छुटकारा दिलाने का झूठा और बेबुनियाद झांसा देकर फसाया जाता है। उनका आर्थिक,मानसिक और शारीरिक शोषण किया जाता है और उनके दुःख दर्द आदि का नाजायज फायदा उठाया जाता हैं और उन्हें मानसिक रूप से विकृत बना दिया जाता हैं।

जबकि इन बदमाश औलिया, मौलवियों, बंगाली बाबाओं, मियां, जादूगर बाबाओं और तांत्रिकों आदि के पास ऐसी कोई आलोकिक शक्ति या इल्म आदि नहीं होता जिससे ये किसी का भला कर सकें बल्कि ये खुद नशेडी, अय्याश, चालबाज, धोखेबाज और अपराधिक प्रवृति के होते हैं। इनके क्या किसी के पास भी नहीं होता। अपनी मेहनत और ईश्वर पर विश्वास ही हमारा सबसे बड़ा सहायक होता है।

- राजीव चौधरी

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्रीकृष्ण जन्मोष्टमी (12 अगस्त) पर विशेष

आर्य आदर्शों के अद्वितीय प्रतीक श्रीकृष्ण

– स्व. डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्य जाति सदा से ही पर्व प्रिय रही है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हम आर्य जन हमेशा हर्षोल्लास से मनाते रहे हैं, किंतु इस वर्ष कोरोना के चलते सारे पर्व त्योहारों को सामूहिक रूप से मनाना संभव नहीं हो पाया। पर फिर भी हम लोग अपने अपने स्तर पर नियम और व्यवस्था को अपनाते हुए पर्वों से प्रेरणा अवश्य लेते रहेंगे। यह पर्व ऐसी विशिष्ट स्मृति को संजोए हुए हैं जिसे मनाने से निराश-हताश उदास और निर्बल व्यक्तियों में भी आशा उत्साह और उमंग का संचार संभव होता है। श्री कृष्ण की जीवन गाथा यथार्थ में मृत संजीवनी है जिसे पढ़कर अथवा सुनकर कायर और डरपोक मनों में भी वीरता और निर्भयता का संचार संभव होता है। उनका संपूर्ण जीवन एक प्रेरणा का प्रकाश है,ठीक ही कहा है – स जातो येन जातेन याती वंश समुन्नतिम, संसार में ऐसे महामानव का ही जन्म सफल होता है जिनसे परिवार जाति व राष्ट्र उन्नति को प्राप्त करते हैं। महर्षि दयानंद जी के शब्दों में ऐसे व्यक्ति ही अहो भाग्यशाली होते हैं जिनका समस्त जीवन निस्वार्थ सेवा में ही लगा हो, धन्या नरा विहित कर्म परोपकार श्री कृष्ण का जन्म और जीवन मानव मात्र के लिए प्रेरणा का उज्जवल प्रकाश है। श्री कृष्णजन्मोत्सव की सभी आर्य जनों को बहुत-बहुत बधाई। – सम्पादक

श्रीकृष्ण संध्योपासना तथा अग्रिहोत्र आदि दैनिक कर्तव्यों का पालन करने में भी कभी प्रमाद नहीं करते थे। "महाभारत" में स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या के उल्लेख मिलते हैं। दुर्योधन से संधि वार्ता के लिए जाते हुए मार्ग में जब जब प्रात: सायं समय की उपस्थिति होती है श्री कृष्ण संध्या और अग्निहोत्र करना नहीं भूलते। "महाभारत" में लिखा है :-

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान् सर्वमाह्निकम्। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञात: प्रययौ नगरं प्रति।।

"प्रात: काल उठकर कृष्ण ने दैनिक (संध्याहवन आदि) सब क्रियाय कीं, पुन: ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया।" इसी प्रकार का एक अन्य उल्लेख है :-

कृत्वा पौर्वाह्णकं कृत्य स्नात: शुचिरलंकृत:। उपतस्थे विवस्वन्तं पावकं च जनार्दन:।।

"फिर उन्होंने पवित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत हो, संध्या-वंदन, परमात्मा का उपस्थान एवं अग्निहोत्र आदि पूर्वाह्णककृत्य सम्पन्न किए।"

अब इसे विडम्बना के अतिरिक्त और क्या कहा जाय कि नित्य संध्या-योग (ब्रह्मयज्ञ) के द्वारा सच्चिदानन्द परमात्मा की पूजा करनेवाले देवयज्ञ-रूपी अग्निहोत्र के द्वारा देवताओं का पूजन करने वाले आर्योचित मर्यादाओं के पालक एवं रक्षक आदर्श महापुरुष श्री कृष्ण को साक्षात् ईश्वर कह दिया जाए।

मनुष्य अपनी विविध प्रवृत्तियों को सर्वोच्च सोपान पर पहुंचा कर किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति से महामानव एवं युगपुरुष के उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण श्री कृष्ण का जीवन है। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियों में जन्म लेकर भी कोई मनुष्य संसार का महत्तम नेता बन सकता है, यह श्रीकृष्ण का चरित्र देखने से स्वत: ही विदित हो जाता है। बंकिम के अनुसार श्रीकृष्ण ने अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी तथा लोकरंजनी तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों को विकास की चरम सीमा तक पहुंचा दिया था, तभी उनके लिए यह सम्भव हो सका कि वे अपने समय के महान् राजनीतिज्ञ और समाजव्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके।

बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त श्रीकृष्ण उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे। धर्म के अनुसार लोगों को स्व-कर्तव्य-पालन-हेतु प्रेरित करना ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रहा। वे स्वयं धर्म में अनन्य निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान् धर्मोपदेष्टा थे। ऋषि दयानन्द ने तो यहाँ तक कह दिया था कि '**श्रीकृष्ण ने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त कुछ भी बुरा काम नहीं किया।**' यह सब कुछ धर्म पालन के कारण ही सम्भव हुआ। इसीलिए महाभारतकार को लिखना पड़ा :-

यतो धर्मस्तत: कृष्णो यत:
कृष्णस्ततो जय:

"जहां धर्म है-वहां कृष्ण हैं, जहाँ कृष्ण हैं-वहां जय है।" संजय ने भी इसी प्रकार की बात "गीता" का उपसंहार करते हुए कही थी :-

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो
धनुर्धर:। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रु वा
नीतिर्मतिर्मम।।

"जहाँ योगेश्वर कृष्ण और गाण्डीवधारी अर्जुन हैं, वहीं श्री है, वहीं विजय है। अधिक क्या कहें, वहीं ऐश्वर्य और ध्रुव नीति है।" ये उक्तियाँ श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर नहीं कही गई हैं। यदि ऐसा होता तो इनका कुछ भी मूल्य न होता। ये श्रीकृष्ण की सर्वोपरि मानवीय भावनाओं को ही प्रकाशित करती हैं, जिनके चरम परिष्कार के कारण श्रीकृष्ण साधारण मनुष्य की कोटि से उठकर महापुरुषों की श्रेणी में आये, योगेश्वर और पुरुषोत्तम बने।

बाल्यकाल से ही देखिये। एक दृढ़-विचार वाले पुष्ट शरीर वाले और स्वस्थ मन तथा संकलपनिष्ठ आत्मावाले ब्रह्मचारो में जो-जो विशेषताएं होनी चाहिए वे हमें श्रीकृष्ण में मिलती हैं। उनका शारीरिक बल अतुलनीय था। जिससे उन्होंने बालयकाल में ही अनेक त्रासदायक एवं हिंसक जन्तुओं का वध किया। समय आने पर उन्होंने युद्धकौशल और रजनीति का साँगोपॉग अध्ययन किया युद्ध-नीति के वे कितने प्रकाण्ड पंडित थे यह तो इसी से ज्ञात हो जाएगा कि अर्जुन और सात्यकि जैसे वीर उनके शिष्य थे जिनको उन्होंने युद्ध-विद्या सिखाई थी। गदा-युद्ध के वे अच्छे ज्ञाता थे। निर्भयता और चातुर्य के वे आकर थे।

शारीरिक बल के अतिरिक्त उनका शास्त्रीय ज्ञान भी बढ़ा-चढ़ा था। वे वेदों और वेदांगों के अनुपम ज्ञाता थे, यह भीष्म[1] की उक्ति से सिद्ध हो चुका है। साथ ही वे संगीत, चिकित्सा-शास्त्र, अश्व-परिचर्या आदि नाना लौकिक विद्याओं के भी पंडित थे। उत्तरा के मृतप्राय बालक (परीक्षित) को जीवन प्रदान करना, तथा अर्जुन के सारथि बनकर भयंकर युद्धक्षेत्र में अपने रथी की रक्षा करना आदि उदाहरण इन बातों को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किये जा सकते हैं। शारीरिक बल और मानसिक शक्तियों का चरम विकास तो उन्होंने किया ही था, आचार की दृष्टि से उनकी बराबरी कोई समकालीन पुरुष नहीं कर सकता था। वे महान् सदाचारी तथा शीलवान् थे। माता पिता की आज्ञा का पालन करने तथा गुरुजनों के प्रति पूज्य भाव रखने की भावना को उन्होंने कभी विस्मृत नहीं किया। वे मादक द्रव्यों अथवा द्यूत क्रीडा जैसे व्यसनों से सदा दूर रहे, यहाँ तक उन्होंने समय-समय पर यादवों में ये आदेश प्रचारित किये थे कि यदि कोई व्यक्ति मदिरा पीता हुआ पाया जाएगा तो राज्य की ओर से दण्डनीय होगा। ब्रह्मचर्य और संयम की दृष्टि से कहा जा सकता है कि एक पत्नी-व्रत का दृढ़ता से पालन करते हुए भी उन्होंने सपत्नीक बारह वर्ष तक दृढ ब्रह्मचर्य धारण किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जो रूप, गुण और सदाचार में सर्वथा अपने पिता के ही अनुरूप था। यह खेद की बात है कि पुराणाकारों और कवियों ने श्री कृष्ण के इस उज्ज्वल पहलू को सर्वथा विस्मृत कर दिया और उन्हें कामी, लम्पट, कुटिल तथा युद्ध-लिप्सु के रूप में चित्रित किया।

श्रीकृष्ण संध्योपासना तथा अग्रिहोत्र आदि दैनिक कर्तव्यों का पालन करने में भी कभी प्रमाद नहीं करते थे। "महाभारत" में स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या के उल्लेख मिलते हैं। दुर्योधन से संधि वार्ता के लिए जाते हुए मार्ग में जब जब प्रात: सायं समय की उपस्थिति होती है श्री कृष्ण संध्या और अग्निहोत्र करना नहीं भूलते। "महाभारत" में लिखा है :-

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान्
सर्वमाह्निकम्। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञात:
प्रययौ नगरं प्रति।।

"प्रात: काल उठकर कृष्ण ने दैनिक (संध्याहवन आदि) सब क्रियाय कीं, पुन: ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया।" इसी प्रकार का एक अन्य उल्लेख है :-

कृत्वा पौर्वाह्णकं कृत्य स्नात:
शुचिरलंकृत:। उपतस्थे विवस्वन्तं
पावकं च जनार्दन:।।

"फिर उन्होंने पवित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत हो, संध्या-वंदन, परमात्मा का उपस्थान एवं अग्निहोत्र आदि पूर्वाह्णककृत्य सम्पन्न किए।"

अब इसे विडम्बना के अतिरिक्त और क्या कहा जाय कि नित्य संध्या-योग (ब्रह्मयज्ञ) के द्वारा सच्चिदानन्द परमात्मा की पूजा करनेवाले देवयज्ञ-रूपी अग्निहोत्र के द्वारा देवताओं का पूजन करने वाले आर्योचित मर्यादाओं के पालक एवं रक्षक आदर्श महापुरुष श्री कृष्ण को साक्षात् ईश्वर कह दिया जाए।

कृष्ण-चरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनैतिक विलक्षणता और नीतिज्ञता है। राजनीति के प्रति उनका यह अनुराग किसी स्वार्थ भावना से प्रेरित नहीं था और न ही उनकी राजनैतिक विचारधारा किसी संकुचित राष्ट्रवाद के घेरे में आबद्ध थी। उस युग में तो आज जैसा राष्ट्रवाद जन्मा ही नहीं था। कृष्ण का राष्ट्रवाद तो लोक कल्याण, जन हित करने तथा सब प्रकार की अराजकता, अन्याय तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर धर्म राज्य की स्थापना के लक्ष्य को लेकर ही चला था। सम्पूर्ण मानव जाति ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के कल्याण के भाव को लेकर ही उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया था।

सर्वप्रथम उनकी दृष्टि अपने जन्म स्थान मथुरा जनपद के स्वेच्छाचारी, एकतन्त्रात्मक शासन के प्रतिनिधि अत्याचारी शासक कंस के ऊपर गई। उन्होंने पारिवारिक और वैयक्तिक सम्बन्धों का विचार न करते हुए जनता के हित को सर्वोपरि समझा और कंस के विनाश में ही सबके कल्याण को देखा। कंस की मृत्यु के पश्चात ही मथुरा वासियों को अपनी सर्वांगीण उन्नति करने का अवसर मिला। श्री कृष्ण का एक कार्य अभी पूरा ही नहीं हुआ था। जरासंध के आक्रमणों का सिलसिला आरम्भ हो गया। कंस के मारे जाने से जरासंध ने यह तो अनुमान लगा लिया था कि अब अधिक दिनों तक आर्यावर्त में अत्याचार, अनाचार तथा स्वेच्छाचार नहीं चल सकेगा, क्योंकि श्री कृष्ण के रूप में एक ऐसी शक्ति का उदय हो चुका है जो सदाचार, धार्मिकता, मर्यादा-पालन तथा जनहित को ही महत्त्व देती है। कंस भी तो आखिर जरासंध का ही जमाता तथा उसी की नीतियों का अनुगामी था। कंस वध की घटना से जरासंध ने अपनी दुर्नीति तथा षडयंत्र प्रवृत्ति की ही पराजय देखी। वह तुरन्त मथुरा पर चढ़ दौड़ा और एक बार नहीं, सत्रह बार आक्रमण किये। कृष्ण के अपूर्व रणचातुर्य तथा उनके सफल नेतृत्व में यादवों ने जरासन्ध की सेना के दाँत खट्टे कर दिये, परन्तु जब श्री कृष्ण ने ही यह समझ लिया कि शूरसेन प्रदेश सुरक्षा की दृष्टि से उत्तम नहीं है तो उन्होंने यादव जाति के

– *शेष पृष्ठ 5 पर*

पृष्ठ 4 का शेष

निवास के लिये द्वारिका जैसे भौगोलिक दृष्टि से सुदृढ़ आवास स्थान को ढूंढ निकाला और उसे ही यादवों की राजधानी बनाया। और जरासंध के सेनापति शिशुपाल ने प्रथम तो रुक्मिणी के विवाह के अवसर पर पुनः युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के प्रसंग में कृष्ण को प्रथम अर्ध्य देने के प्रस्ताव को लेकर विवाद खड़ा किया तथा यज्ञ ध्वंस करके कृष्ण के धर्मराज संस्थापन के महज लक्ष्य की पूर्ति में बाधक बना। उस समय कृष्ण ने ही शिशुपाल का वध किया और इस प्रकार "विनाशाय च दुष्कृताम" से संकेतित दुष्ट जनों के विनाश रूपी महायज्ञ में एक ओर आहुति प्रदान की। जरासन्ध को समाप्त करने का अवसर तो इससे पूर्व ही उपस्थित हो गया था। 86 राजाओं को कैद कर तथा इन अभागे राजाओं की संख्या 100 हो जाने पर उनकी बलि कर देने का जो पैशाचिक विचार जरासन्ध ने कर रखा थ उसे सहन करना श्री कृष्ण जैसे धर्मात्मा एवं करुणाशील पुरुष के लिए असम्भव ही था। इस दुष्कृत्य को पूरा करने का विचार रखने के कारण जरासन्ध अपने अत्याचारों की चरम सीमा तक पहुंच चुका था और अब उसे अधिक सहन करना सम्भव नहीं था। मनुष्य जाति का ऐसा शत्रु जरासन्ध भी श्री कृष्ण की नीतिमत्ता तथा भीम के शौर्य से मारा गया। उसमें न तो युद्ध ही हुआ और न अनावश्यक रक्तपात।

"महाभारत" के युद्ध में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, दुर्योधन आदि कौरव पक्ष के सभी महारथी वीरों का एक एक कर अन्त हुआ और इस प्रकार युधिष्ठिर के धर्मराज्य संस्थापन रूपी महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस महत कार्य की सिद्धि में श्री कृष्ण का योगदान तो सर्वोपरि था। श्री कृष्ण की इस अपवूं नीतिज्ञता, रण चातुरी तथा व्यवहार कुशलता को ठीक-ठीक न समझकर उन पर युद्ध-लिप्सु होने का आरोप लगाना अथवा समस्त देशों को युद्ध की भयंकर एवं विनाशकारी ज्वालाओं में झोंककर स्वयं तमाशा देखनेवाला बताना, सर्वथा अनुचित है। श्री कृष्ण ने यथाशक्य युद्ध का विरोध किया, यह हम महाभारतीय युद्ध की आलोचना के प्रसंग में देख चुके हैं। उन्होंने न तो युद्ध को राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का एक मात्र अनिवार्य उपाय माना और न उसमें कूद पड़ने के लिये किसी को उत्साहित ही किया। यहां तक की वैयक्तिक मानापमान की परवाह किये बिना वे स्वयं पाण्डवों की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गये। यह सत्य है कि इस लक्ष्य को वे पूरा करने में असफल रहे, परन्तु इसमें संसार को यह तो ज्ञात हो ही गया कि महात्मा कृष्ण शान्ति स्थापना के लिये कितने उत्सुक थे तथा युद्ध के कितने विरोधी थे। उन्होंने स्वयं कहा था कि वे पृथ्वी को युद्ध की महाविभीषिका से वचा देखना चाहते हैं।

यह ठीक है कि दुर्योधन ने अपने दुष्ट स्वभाव तथा कुटिल प्रकृति के कारण उनकी बात नहीं मानी, फलतः युद्ध भी अपरिहार्य हो गया, परन्तु लोगों पर यह भी अप्रकट नहीं रहा कि पाण्डवों का पक्ष सत्य न्याय और धर्म का पक्ष था तथा कौरव असत्य, अन्याय और अधर्म का आचरण कर रहे थे। संसार के लोगों को सत्य और न्याय का वास्तविक ज्ञान कराने में ही श्री कृष्ण को अपूर्व दूरदर्शिता तथा मेधा का परिचय मिलता है। युद्ध होना ही है, जब यह निश्चित हो गया तो श्री कृष्ण की विचारधारा भी इसी के अनुसार बन गई। फिर तो उन्होंने अत्याचार के शमन और दुष्टों को दण्ड देने के लिये किये जाने वाले युद्ध को क्षत्रिय वर्ण के लिये स्वर्ग का खुला हुआ द्वार बताया तथा अर्जुन की यह निश्चय करा दिया कि आततायियों को मार डालना ही धर्म है। रणक्षेत्र में उपस्थित होते ही अर्जुन में जिन क्लीव भावों का संचार हुआ उन्हें अनार्यजुष्ट, अस्वर्ग्य और अकीर्तिकर बताते हुए श्री कृष्ण ने अर्जुन को विगतज्वर करके युद्ध करने को प्रेरणा दी। वास्तव में क्षात्र धर्म का यही यथार्थ रूप था जिसे कृष्ण ने अपनी ओजस्वी बाणो तथा प्रभाविष्णु शैली में उपस्थित किया। आज हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी श्री कृष्ण की वह ओजस्विनी शिक्षा मन की निराशा, ग्लानि तथा दौर्बल्य को दूर करती है एवं कर्तव्य पालन करने के लिये उठने को प्रेरणा देती है।

यह है कृष्ण की राजनीतिज्ञता का किंचित् दिग्दर्शन! उन्होंने अपने जीवन में जहाँ अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया, वहां उन्होंने सामाजिक समस्याओं की भी अवहेलना नहीं की। श्रीकृष्ण वर्णाश्रम धर्म के प्रबल पोषक और शास्त्रीय मर्यादाओं के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने स्वयं "गीता" में वर्णाश्रम धर्म का विधान करते हुए वर्णों को गुण एवं कर्मों पर आधारित बताया है। उनके अनुसार जो व्यक्ति शास्त्र विधि को छोड़कर मनमाना स्वेच्छाचार करता है, उसे न तो सिद्धि ही प्राप्त होती है और न परलोक में उत्तम गति। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वे किसी प्रकार की सामाजिक संकीर्णता अथवा कट्टरता के पोषक थे। अनुदारता गतानुगतिकता तथा रूढ़िवादिता के वे प्रबल विरोधी थे। उनकी सामाजिक धारणायें उदारतापूर्ण तथा नीतियुक्त थीं। उन्होंने सदा दलित, पीड़ित एवं शोषित वर्ग का ही साथ दिया। विदुर जैसे धर्मात्मा उनके सम्मान के पात्र रहे। नारी वर्ग के प्रति उनकी महती श्रद्धा थी। कुन्ती, गांधारी, देवकी आदि पूजनीय गरीयसी महिलाओं के प्रति उनके मन में सदा आदर, सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहा। सुभद्रा तथा द्रोपदी आदि कनिष्ठ देवियों के प्रति उनका स्नेह सदा बना रहा। वे जानते थे कि मातृ शक्ति का यथोचित सम्मान होने से ही देश की भावी सन्तान में श्रेष्ठ गुणों का संचार होगा।

श्रीकृष्ण के व्यक्तित्त्व के इन पहलुओं की समीक्षा कर लेने के पश्चात् भी उनके चरित के उस महान् एवं उदात्त पक्ष की ओर ध्यान देना आवश्यक है जिसके कारण वे आध्यात्मिक जगत् के सर्वोत्कृष्ट उपदेष्टा समझे गये और योगेश्वरों में उनकी परिगणना हुई। वे आज भी कोटि कोटि जनों की प्रेरणा, श्रद्धा तथा निष्ठा के पात्र बने हुए हैं। श्री कृष्ण राजनीतिज्ञ थे, धर्मोपदेशक तथा धर्मसंस्थापक भी थे। वे समाज-संशोधक तथा नूतन क्रांति-विधायक भी थे, किन्तु मूलतः वे योगी तथा अध्यात्म-साधना के पथिक थे। उन्होंने जल में रहने वाले कमल की भांति संसार में रहते हुए, सांसारिक वासनाओं से निर्लिप्त रहकर कर्तव्य की भावना से आचरण करने के योग की शिक्षा दी।

वे ज्ञान और कर्म के समन्वय के पक्षपाती थे। साथ ही उपसना योग का भी समर्थन करते थे। ज्ञान, कर्म और उपासना का सामंजस्य ही आर्यचिंतन की विशेषता है और यह समन्वय-भावना ही श्रीकृष्ण के व्यक्तित्त्व में साकार हो उठी थी। श्रीकृष्ण स्वयं सच्चिदानन्द ब्रह्म के परम-उपासक थे और इस सर्वोच्च तत्त्व का साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् भी वे लोक-मार्ग से च्युत होना अनुचित मानते थे। "गीता" में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि पूर्णकाम व्यक्ति के लिये यों तो कुछ भी करना शेष नहीं रहता, किन्तु लोक-यात्रा -निर्वाह की दृष्टि से उन्हें भी आर्योचित मर्यादाओं का पालन करना ही पड़ता है। इस प्रकार उन्होंने कालान्तर में प्रवर्तित श्रमणवाद-प्रतिपादित निवृत्ति-मार्ग का एकान्ततः अनुसरण करने को अनुचित बताया। श्रीकृष्ण के दर्शन का यही चरम तत्त्व है और यही लौकिक सफलता का भी रहस्य है।

जीवन की इन विविधतापूर्ण एवं सर्वांगीण प्रवृत्तियों का समन्वित अनुशीलन एवं परिष्कार ही श्रीकृष्ण-चरित्र की विशिष्टता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण जैसा व्यक्ति इस देश में ही नहीं बल्कि संसार में भी कदाचित् ही जन्मा हो। आर्यमर्यादाओं के अप्रतिम रक्षक राम से उनके विविध व्यक्तित्त्व की तुलना अवश्य की जा सकती है, परंतु दोनों के युग तथा जीवन की अन्य परिस्थितियों में मौलिक अन्तर था। राम स्वयं आदर्श राजा थे, किन्तु कृष्ण को आदर्श राज्य संस्थापन का कार्य स्वयं करना पड़ा। कृष्ण तो राजाओं के निर्माता, परंतु स्वयं राजसत्ता से दूर रहने वाले साम्राज्य-संस्थापक थे। राम के समक्ष वैसी कठिनाइयां नहीं आई जिनसे कृष्ण को जूझना पड़ा। अतः किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाय, श्रीकृष्ण का चरित्र एवं व्यक्तित्व भूमण्डल में अद्वितीय ही माना जाएगा।

प्रेरक प्रसंग

टोकरी में क्या है?

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह के कुछ समय बाद हल्लीखेड़ या माणिकनगर में कहीं एक विशाल आर्यसम्मेलन था। आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना करके पं. क्षितीशजी वेदालंकार को हैदराबाद बुलाया गया। वहाँ श्री पण्डित नरेन्द्रजी ने उन्हें हल्लीखेड़ जानेवाली एक बस में बिठाकर कहा, चलिए मैं भी बाद में वहाँ पहुँच जाऊँगा।

क्षितीशजी बस से उतरकर महा सम्मेलन के पण्डाल में पहुँचे। वहाँ वेदी पर जाकर बैठे ही थे कि कुछ ही मिनटों में वहाँ एक कार पहुँच गई। कार में एक सवारी थी और एक चालक था। बस! क्षितीशजी से रहा न गया। कार से बाहर निकलने वाले टोपीधारी व्यक्ति पण्डित नरेन्द्रजी ही तो थे।

श्री क्षितीशजी ने पण्डित नरेन्द्रजी से कहा कि यदि मैं भी कार में आपके संग आ जाता तो क्या कार के टायर घिस जाते या मेरे साथ बैठने में कार में दुर्गन्ध फैल जाती?

पण्डित नरेन्द्र जी ने कहा, ''पण्डित जी आपने अच्छा किया जो यह प्रश्न पूछ लिया अन्यथा मन से संशय-सा बना रहता। उठो! चलो मेरे साथ और कार में पड़ी टोकरी को तो देखो।'' कार चालक को कहा, ''दिखाओ पण्डितजी को वह लड्डुओंवाली टोकरी।'' कार से टोकरी बाहर निकाली गई। उसका ढक्कन हटाया गया तो क्या देखा कि उसमें कुछ सामान के नीचे एक बड़ा सा बम्ब रखा हुआ था।

पण्डित नरेन्द्रजी ने कहा कि रियासत के सब आर्यों के आगे पीछे पुलिस व गुप्तचर लगे रहते हैं। मार्ग में रोककर कार देखी जाती तो मेरे साथ आप भी पकड़े जाते। मेरे आगे-पीछे तो कोई है नहीं। आप गृहस्थी हैं, राज्य से बाहर के व्यक्ति हैं, बहुत बड़े विद्वान् हैं। मैं तो आर्यसमाज का एक साधारण सेवक हूँ। मुझे फाँसी लग जाए या फिर जेल में डाल दिया जाए तो कुछ नहीं बिगड़ेगा। हमारे कारण आप-जैसा विद्वान् कष्ट पावे, यह मैं नहीं चाहता था। इस कारण आपको बस से यहाँ भेजा।

कितने ऊँचे भाव थे आर्यसमाज के निर्माताओं के! आप तनिक इस घटना पर गहराई से विचार करें। पराई आग में कूदनेवाले इन बलिदानी वीरों में परोपकार के कैसे पवित्र विचार थे। स्वयं को तो एक तुच्छ सेवक बता रहे हैं और दूसरे के जीवन को मूल्यवान् समझकर उसकी रक्षा की कैसी चिन्ता है। यही तो उन लोगों का बड़प्पन था। यह घटना स्वयं क्षितीशकुमार जी ने मुझे सुनाई थी।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

लड़कियां हीनभावना को कैसे दूर करें?

.....आजकल लड़कियाँ अपने आपको लड़की होने पर असुरक्षित और हीन समझ कर प्रत्येक कार्य में पुरुषों से स्पर्धा करने लगती हैं। जैसे पुरुषों जैसी वेशभूषा, तंग वस्त्र, धूम्रपान, मद्यपान, मोबाईल पर गप- शप मारना आदि कार्य अपनी हीन भावना छिपाने के लिये ही किये जाते हैं। इस हीन ग्रन्थों से छूटना होगा। सभी कार्यों में पुरुषों का अनुकरण करने से उनके स्त्री हारमोन परिवर्तित होने लगते हैं।.....

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

गतांक से आगे -

जब कोई लड़की को विद्यालय में कार्यवश विलम्ब हो जाता है तो विशेष रूप में रात्रि के समय किसी अनहोनी से वह सिहर जाती है और अपने आप को लड़की होने के कारण भाग्य को कोसने लगती है। उस समय उसे प्रथम अपने परिवार को विलम्ब से आने की सूचना देनी चाहिये और किसी सम्भावित घटना का मुकाबला करने के लिये मानसिक रूप में तैयार रहना चाहिये। इसके लिये प्रत्येक लड़की को अनिवार्य रूप में आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना चाहिये।

जब कोई लड़की किसी नवीन कार्य या दूर जाकर प्रशिक्षण लेने की इच्छा प्रकट करती है तो प्राय: परिवार के लोग एक बार में ही सहमत नहीं होते। इस समय अपनी योजना विफल न हो इसके लिये उसे अपने परिवार को आश्वस्त करना चाहिये कि आप मुझ पर विश्वास रखें। मैं आप द्वारा बतलायें मार्ग का अनुसरण करते हुये ही शिक्षा ग्रहण करूँगी। इस से घर वाले निश्चिन्त हो जायेंगे।

आजकल लड़कियाँ अपने आपको लड़की होने पर असुरक्षित और हीन समझ कर प्रत्येक कार्य में पुरुषों से स्पर्धा करने लगती हैं। जैसे पुरुषों जैसी वेशभूषा, तंग वस्त्र, धूम्रपान, मद्यपान, मोबाईल पर गप-शप मारना आदि कार्य अपनी हीन भावना छिपाने के लिये ही किये जाते हैं। इस हीन ग्रन्थों से छूटना होगा। सभी कार्यों में पुरुषों का अनुकरण करने से उनके स्त्री हारमोन परिवर्तित होने लगते हैं।

माता-पिता लड़की के किसी कार्य में असहमत हैं या रूचि नहीं लेते तो यदि वह कार्य मर्यादा से बाहर का है तो उसे न करना ही उचित है। यदि उसमें मर्यादा का उल्लंघन नहीं होता तो परिवार को आश्वस्त कर उसमें तन्मय हो जाने से सफलता आपके चरण चूम लेगी और आपकी हीन भावना भी छू मन्तर हो जायेगी।

आप में यदि शारीरिक शक्ति की न्यूनता है और इस कारण हीन भावना आ गई है तो इसे हटाने के लिये प्रतिदिन व्यायाम करें और किसी सामूहिक खेल में भाग लें।

अपनी योग्यता तथा दूसरे गुणों का विकास करने से हीन भावना स्वत: ही दूर हो जाती है।

अपनी रूचि के अनुसार संगीत, नाटक, चित्रकला या मन पसन्द कार्यों में कुछ समय लगायें। इससे मानसिक तनाव दूर हो जायेगा।

जीवन का उच्चतम लक्ष्य निर्धारित करें और इसी में अपनी सारी ऊर्जा को केन्द्रित कर दें। आप देखेंगी कि एक दिन आप लक्ष्य के शिखर पर अपने आपको पायेंगी।

जब कभी हीन भावना या निराशा के भाव आने लगें तो सच्चे हृदय से प्रार्थना करें - **बलमसि बलं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि** - हे परमेश्वर! आप बल के भण्डार हैं मुझे भी वह शक्ति सामर्थ्य दीजिये। आप दुष्टों का दमन करने वाले हैं, मैं भी इन सभी विघ्न बाधाओं का धैर्य से सामना कर सकूं ऐसा सामर्थ्य प्रदान कीजिये।

महिलायें अपने पुरुषार्थ से संघर्ष करती हुई जीवन संग्राम में आगे बढ़ी हैं उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपना लक्ष्य निर्धारित करें।

कई बार व्यक्ति अपने से अधिक बुद्धि, शक्ति, धन, सम्पत्ति वालों को देखकर अपने को छोटा जान दु:खी हो जाता है। ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो आप से गुणों में न्यून होते हुये भी सुख से जी रहे हैं तो आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

भूतकाल की घटनाओं का चिन्तन कर अपनी ऊर्जा को क्षीण करने के स्थान पर अपने उज्जवल भविष्य का चिन्तन करें।

यह अनिवार्य नहीं है कि आप सभी गुणों में दूसरों के समान या अग्रणी हों। जो गुण आपमें प्रधानता से विधमान हैं उन्हीं का विकास करने में अपनी शक्ति लगा देने से स्वत: ही हीन भावना अदृष्य हो जायेगी।

चिन्तन करें- **'अहमिन्द्रो न परा जिग्ये नावतस्थे मृत्यवे कदाचन'** मैं अनेक शक्ति एवं सामर्थ्य वाली चेतन आत्मा हूँ। मैं हार नहीं मानूंगी और न ही मृत्यु के भय से अपने कर्त्तव्य से विचलित होऊंगी।

- क्रमश:

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

......When Munshi Ram arrived at the place of the lecture, he felt very surprised for in the audience he saw some Englishmen. But he was all the more surprised when he listened to the lecture. He wondered how a man who knew only Sanskrit could be so interesting and convincing. ......

......Swami Dayanand heard him patientlyand kept quiet. But next day in the course of his lecture the Swami said, "1 will always speak the truth, come what may. 1 do not care for the Collector nor am 1 afraid of the Commissioner. Even the Governor cannot hold me back from telling the truth. I stand for truth and I will die for it." ....

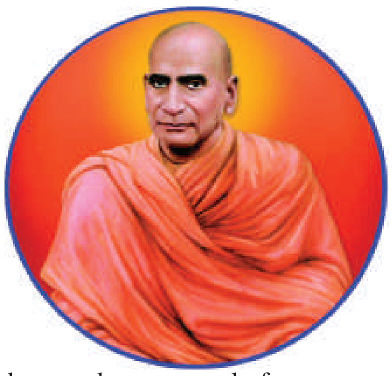

Now Munshi Ram entered upon one ofthe busiest periods of his life. He edited his weekly paper; he looked after his practice; and above all he gave much of his time to the Arya Pritinidhi Sabha. But he was not satisfied with all this. He loved the ancient Aryan culture and wanted to revive it. The best way to do so, he thought, was to found a Gurukula. It was to be a kind of college where boys were to be taught from the age of six to twenty-five. This was the ancient Aryan ideal of education. It was also thought that these students should stay away from cities. They would thus live where they studied. And this should go on till they had fmished their education.

It was a new idea, and nobody knew how it would be received by the people. But Munshi Ram's energy and determination overcame all obstacles. First of all, he toured the country to collect thirty thousand rupees. After having done so he fixed upon a fine spot at Kangri near Hardwar for the buildings of the Gurukula. This was the gift of a rich landlord ofNajibabad named Munshi Aman Singh. When Munshi Ram took it over, it was nothing but a jungle. But soon he had it cleared. After some time it became one of the best sites in the country. All this was due to the self-sacrifice ofMunshi Ram and his band of devoted workers.

The Gurukula, thought Munshi Ram, should differ from ordinary schools and colleges. In the first place, it should enjoin celibacy on the students. In other words the students should cultivate purity in thought, word and deed. This could only be done if the students were kept away from the temptations of cities. He also believed that education should be imparted to the students through the medium ofHindi. This appeared to be at first a very difficult task. But afterwards people came to believe that it was a very wise thing to do.

But Munshi Ram did not want the Gurukula to impart instruction only in the ancient Sanskrit. He also wanted the students to learn modem languages and science. On this question there arose a difference between him and some of his eo-workers. But Munshi Ram remained film. Some of his devoted friends left him, but time has justified his actions.

Munshi Ram also believed that the Gurukula should be independent of Government control. He did not think that the aim of education should be to qualify students for employment. He believed that the aim of education was to develop character and to produce good and noble citizens. So he said, "My students will not run after petty jobs. They will do something better and nobler. They will be the builders of a nation."

These were the ideals that inspired Munshi Ram. To carry them into effect he gave up everything. He left both his home and his practice. From this time onward the Gurukula was everything to him. He lived there and fully shared the-life of the students. He prayed with them, he took exercise with them and dined with them. Sometimes he also took part in instructing them. Whatever time was to spare was given to the work of building and to the laying out ofthe garden. No wonder that everybody called him Mahatma, or the great-souled one.

Just at this time the Arya Samajists became suspected by their rulers. They were subjected to all kinds of persecution. The most well-known of these was the prosecution oftheArya Samajists by the Patiala State. Most oftheArya Samajists there were arrested. Then a case was started against them for disloyalty to the State. But while the State itself engaged the best English lawyers, these people were not permitted to have any lawyers outside the State.

Mahatma Munshi Ram saw all this and was very grieved. So he wrote articles to arouse public opinion. He also toured the province and delivered lectures. Then he collected money for the defence of theArya Samajists. He himself, assisted by some able lawyers, took the defence into his own hands. Finally, he saw the Maharaja, to whom he represented the true facts of the case. The result of all this was that the case against the Arya Samajists was withdrawn. But the Maharaja ordered that all Arya Samajists who were not residents of the State should leave within seven days. Through this order many of them lost their jobs. But Mahatma Munshi Ram employed some of them in the Gurukula itself. In this manner he saved some people from a great deal of misfortune.

During this period the mission of the Gurukula also came to be misunderstood. Some thought that it taught its pupils the use of arms. Others thought that it taught horsemanship. One gentleman wrote in the papers that he had seen with his own eyes the Brahmcharis learning archery. All this implied that the students of the Gurukula were engaged in some unlawful activities. But Mahatma Munshi Ram soon dispelled all these fears and doubts. He invited the Lieutenant Governor ofthe U'P, to visit the place. Sir James Meston, now Lord Meston, went there three times. The last time he went he was accompanied by the Viceroy ofIndia, Lord Chelmsford. They saw everything with their own eyes. They were struck with the simple life ofthe students, and admired the courage of Mahatma Munshi Ram.

After sometime it occurred to Mahatma Munshi Ram that it would be very useful to have a fixed capital of fifteen lacs for the Gurukula. His idea was to run it with the interest on this sum, plus the fees of the students.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

प्रथम पृष्ठ का शेष

हैं कि यहां पर बहुत से लोग उनका नाम लेकर अपने दिन की शुरुआत करते हैं लेकिन इससे भी ज्यादा आवश्यकता है कि हम उनके जीवन चरित्र को अपने जीवन में धारण करें उनके कर्मों को प्रेरणा का आधार मानें जिससे यह भारत की धरती राम राज्य के रूप में जो इसकी विशेष पहचान थी वह फिर से कायम हो।

5 अगस्त 2020 को संपूर्ण आर्य जगत में अत्यंत प्रसन्नता का वातावरण निर्मित था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में विश्व की समस्त प्रांतीय सभाओं के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उत्साह उमंग और उल्लास से भरपूर दिखाई दिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने संपूर्ण भारतवासियों और वैदिक धर्मियों को अपनी शुभकामनाएं और बधाई प्रेषित की।

इस विशेष अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी, प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी तथा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी देशवासियों और विश्व आर्य समाज के अधिकारियों कार्यकर्ताओं और सदस्यों को शुभकामनाएं और बधाई प्रेषित की।

महान आर्य नेता, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान और एमडीएच के चेयरमैन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने श्री राम स्मारक मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर विश्व को बधाई देते हुए अपने संदेश में कहा की मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भारतीय जनमानस में इस तरह से रचे बसे हैं कि उनका नाम और काम दोनों मानव मात्र के लिए सदप्रेरणाओं का सबक है, आज जब श्री राम मंदिर की आधारशिला रखी जा रही है तो मैं सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। महाशय जी की ओर से जी न्यूज के माध्यम से तथा महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर के माध्यम से संपूर्ण विश्व को शुभकामनाएं प्रदान की गई।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के ....

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने कहा कि युगों-युगों से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम संपूर्ण आर्यवर्त के लिए एक महान आदर्श और प्रेरणा के स्रोत रहे हैं ऐसे महापुरुष की जन्मस्थली अयोध्या में भारत देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा भव्य मंदिर का शिलान्यास किया जा रहा है इस अवसर पर मैं संपूर्ण विश्व की आर्य समाज की ओर से हार्दिक अभिनंदन और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने कहा कि आज अत्यंत हर्ष का विषय है की मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चंद्र जी की जन्मभूमि पर एक भव्य स्मारक का मंदिर के रूप में निर्माण होने जा रहा है। वर्षों के लंबे संघर्ष और प्रतीक्षा के उपरांत हमें यह शुभ अवसर देखने को मिला है। यह विश्व की ऐतिहासिक धरोहर के रूप में मान्य होगा। मैं इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से आप सबको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने देशवासियों को आर्यसमाज और संगठन की ओर से शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी महाराज हम सबको मर्यादा की महान प्रेरणा देते हैं। उनका जीवन सत्य और न्याय का आदर्श है।

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी आर्यपुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी महाराज को भारतीय वैदिक संस्कृति और परंपरा का आधार मानते हैं। वर्षों तक चली न्यायालय की प्रक्रिया में आर्य समाज भी एक पक्ष रहा। आज हमें बहुत प्रसन्नता है कि आज इस समय हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के भव्य स्मारक के रूप में एक मंदिर की नींव रखने जा रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी आने वाली पीढ़ियां मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की मर्यादा से प्रेरणा लेकर भारतवर्ष को रामराज्य बनाने के लिए अग्रसर होंगी। मैं विश्व की संपूर्ण मानव जाति को आर्य समाज की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अयोध्या में आयोजित श्री राम जन्मभूमि स्मारक मंदिर के शिलान्यास के संपूर्ण कार्यक्रम को महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर द्वारा लाइव प्रसारित किया गया इस पूरे कार्यक्रम को बहुत सारे आर्यजनों ने लाइव देखा और सब लाभान्वित हुए।

पृष्ठ 2 का शेष

श्रीराम मन्दिर पूजन में ...

जबकि इसके विपरीत अमेरिकी लेखक डेनियल ने 2002 में लिखा था कि छठी सातवीं शताब्दी में मुहम्मद ने जिस युद्ध की घोषणा की थी वह आज तक जारी है। चाहें सूफीयाना मजार के नाम पर हो, आतंक के नाम पर हो, हथियार लेकर घुसपैठ के आधार पर हो, या आँखों में आंसू लेकर शरणार्थी बनकर दूसरे मत आस्था वालों के क्षेत्र में घुसने के आधार पर हो, धर्मनिरपेक्षता के आधार पर हो। यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा, जब तक या तो अन्य लोग आँखें नहीं खोल लेते या ये लोग अपना इच्छित लक्ष्य स्वीकार नहीं कर लेते। इस्लाम में आज जो कुछ है या बीते कल में जो कुछ रहा हो, इसका कोई अर्थ नहीं है और यह आने वाले कल में कुछ अलग होगा। यह सोचना भी बेकार है। क्योंकि अभी भी ट्विटर पर एक खेमे द्वारा ट्रेंड चलाया जा रहा है कि बाबरी जिन्दा है। दूसरी और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड उसकी शाहदत का रोना रो रही है। हालाँकि ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का बयान पढ़कर लग रहा है कि समय की तलाश है वरना बाबरी अभी भी इनके मन और सोच में जिन्दा है। *– सम्पादक*

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल आर्य ....

सेवा का संदेश देते हुए कहा कि जीवन में ईमानदारी और मेहनत का फल सदा अच्छा ही होता है, आप हमेशा मानव सेवा के पथ पर चलते जाना, जीवन में सफलता मिलती ही रहेंगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों में आदरणीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी और अन्य सभी सम्मानित अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने इन विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

– प्रबन्धक

आओ जानें ! सत्य ? असत्य ?
आओ पढ़ें ! सत्यार्थ प्रकाश

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। – *महामन्त्री*

शोक समाचार

श्री विवेक गुप्त जी का निधन

आर्यसमाज चौक, प्रयाग (इलाहाबाद) के झुझारु सदस्य श्री विवेक गुप्त जी का दिनांक 6 अगस्त 2020 को दस दिनों तक कोरोना से संघर्ष के बाद दोपहर 2.45 बजे असामयिक निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 3 अगस्त, 2020 से रविवार 9 अगस्त, 2020
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6-7 अगस्त, 2020
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 अगस्त, 2020

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा शताब्दी पर पुस्तक का विमोचन

स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, के उदघोषक बाल गंगाधर तिलक ने आजादी की लड़ाई में सशक्त भुमिका निभाई। बिखरे समाज को संगठित करके उन्होंने गणेश उत्सवों तथा शिवाजी जन्मोत्सवों की प्रेरक परंपरा शुरु कराई। यह उद्‌गार उत्तरी दिल्ली के महापौर जय प्रकाश जे.पी. ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा शताब्दी पर वरिष्ठ

पत्रकार चंद्रमोहन आर्य की पुस्तक का लोकार्पण करते हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सेंटर नई दिल्ली में कहे। इस अवसर पर उपस्थित प्रतिष्ठित उधोगपति और समाजसेवी बीकानेर वाला के निदेशक नवरत्न अग्रवाल ने कहा कि हमें देश व समाज के कल्याण कार्यों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के स्वागत अध्यक्ष व शिक्षा समिति के अध्यक्ष यशपाल आर्य ने कहा वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने महापुरुषों को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अधिक से अधिक स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करें। वैदिक प्रवक्ता आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ने कहा कारावास की भीषण यातनाएँ सहते हुए बाल गंगाधर तिलक का जीवन संतो जैसा हो गया था। उन्होंने कर्मयोग पर साहित्य लिखा। इस अवसर पर सुदेश आर्य, सत्यानन्द आर्य, सुरेंद्र कोछड़, जितेंद्र भाटिया तथा ललित चौधरी इत्यादि उपस्थित थे।

प्रतिष्ठा में,

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

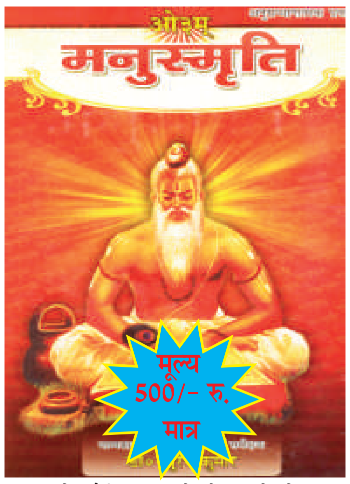

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह